"धर्म अथवा इलाज"

25.धर्म अथवा इलाज - दया धर्म का मूल है - पाप मूल अभिमान अर्थात हे पावन पवित्र आत्मा विशेष पहले तू चैरिटी को छोड़ और खुद स्वंय अपने पर एक विशेष परोपकार कर - जिस के हेतु तुझे ये दुर्लभ आवश्यक मनुष्य का जन्म विशेष मिला है- यानि के अपने स्वंय के इस लोभी-स्वार्थी-पापी मन विशेष को इस धर्म अर्थात सत्य अथवा नाम (अमृत) या गुरू-सतगुरू अर्थात शब्द यानि के केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ अथवा परमात्मा विशेष

के साथ जोड़ ....! (शब्द गुरू सुरत धुन चेला) केवल यही धर्म की असली रूहानी परिभाषा विशेष है ......! यानि के धर्म के भाव है अपने अंतर मन में केवल एक प्रभु को ही धारण विशेष करना तथा इस प्रक्रिया विशेष आवश्यक में कर्म-काण्ड है केवल अपने निजी जीवन को ही निरन्तर मर्यादित विशेष करना यानि के अपने रोजमर्रा के निजी जीवन में प्रत्येक छोटी से छोटी विचारक व्यवहारिक स्थिति विशेष में भी स्वंय को नियम-मर्यादा के अनुकूल ही प्रत्यक्ष स्थापित विशेष करना अर्थात प्रत्येक पोज़िटिव विचार को अपने जीवन में व्यवहारिक "अमली" जामा विशेष पहनाना तथा इसी संकल्प विशेष को निरन्तर आज़ीवन बनाये रखना ही असली परमार्थ विशेष है .....! "रस सुइना" अर्थात सोना-हीरा इत्यादि एकत्र करना "रस रूपा" यानि के रूपो विशेषो के पीछे भागना अथवा स्वंय के रूप में कमी अनुभव करते हुऐ उसे ही संवारने में निरन्तर संलग्न विशेष रहना "कामण रस" यानि के मन इन्द्रियों की सभी अस्वभाविक वासनाओ को पूरा करने हेतु तामसिक वृति अपनाना अर्थात श् "काम ही काम" है में निरन्तर विचरना- संलग्न विशेष रहना "परमल की वास" यानि के पहले तो घर समाज को दूषित-पोषित करना तथा फिर इन से बचने हेतु सुधरने के बजाये सुगन्धियों के पीछे भागना "रस घोड़े" अर्थात दिखावे हेतु बड़े-बड़े साधनों विशेषो को एकत्र कर प्रदर्शित करना "रस सेजा मंदर" अर्थात रहने हेतु बड़े-बड़े महलों

विशेषो की कामना रख कर उन्हे बनाते तथा सजाते रहना तथा इसी वासना में फंसे रह कर प्रेतों की जूनों में वास करने का नतिजा तक भुगतने हेतु भी त्यार विशेष रहना "रस मीठा" अर्थात ज़बान के स्वाद हेतु निरन्तर अलग-अलग पकवानों विशेषो में ही ज़िन्दगी गुजारते हुऐ रोगी विशेष बने रहना "रस मांस" अर्थात पोषण हेतु सात्विक जीवन का त्याग कर सृष्टि के दूसरे प्राणियों का कत्ल विशेष-विशेष करते हुऐ अलग-अलग तरह से "शेखी बखारना" तथा निरन्तर इस अमानवीय घृणित कृत्यों विशेषो को करते हुऐ कामी-अपराधिक वृति विशेष को निरन्तर पोषित विशेष करते हुऐ सदा के लिऐ "तामसिक" हो जाना अर्थात मनुष्य जन्म के आवश्यक अर्थ विशेष को ही सदा के लिये खो देना "ऐते रस शरीर के" अर्थात इतने सारे वादों विवादों से भरपूर रसमय शरीर रूपी घट आवश्यक विशेष में "कै घट नाम निवास" अर्थात नाम-अमृत यानी के केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष अथवा प्रभू के निरन्तर प्रत्यक्ष विशेष होते हुऐ भी भला आत्मा कैसे इस प्रभु मिलन को सम्भव बनाने हेतु समर्थ विशेष हो सकती है .....? "मन का सूतक लोभ है" अर्थात जगत में जितना भी लोभ तथा स्वार्थ महामारी के रूप में उपलब्ध विशेष है उस का जन्म दाता भगवान केवल "मन" विशेष ही है और जगत में सभी फैंसले आप केवल मन को ही प्रत्यक्ष रख कर लेने हेतु प्रचारित विशेष करते है अर्थात आप स्वयं ही इस बिमारी को महामारी का रूप विशेष

देने हेतु ही निरन्तर संलग्न विशेष हैं .....! "जिव्या सूतक कूड़" अर्थात जहां पर इस जुबान से केवल सत्य प्रभाषित करने का अभ्यास विशेष करते हुऐ जीवनयापन करना चाहिये वहाँ पर जीव निरन्तर बिना रुके केवल कूड़ अर्थात झूठ को ही सच का मुखोटा विशेष पहनाये हुऐ सच्चा साबित विशेष करने हेतु ही हर तरह के अपराध विशेष-विशेष कमाता हुआ निरन्तर अपना अर्थात पूरी मनुष्य जाति का ही पतन विशेष करने का साधन विशेष बनता जा रहा है .....! प्रतिदिन जीव जब भी किसी के भी सामने प्रत्यक्ष होता है तो उस सामने वाले के अनुरूप "केवल अपने निजी लोभ-स्वार्थ की पूर्ति हेतु ही" एक अलग किस्म का ही मुखौटा विशेष लगा लेता है .....! फिर दूसरे के सामने ... तथा इसी तरह से आजीवन अपने ही हाथों से अपनी ही कब्र विशेष खोद कर अपने को ही ताबूत विशेष में बन्द विशेष कर उस पर निरन्तर आजीवन तरह-तरह की सुनहरी कीलें विशेष ठोक-ठोक कर उसे अच्छी तरह से पक्का विशेष करने में ही निरन्तर संलग्न विशेष रहता है .....! ताकि कोई उसे इस कब्र विशेष से बाहर निकालना भी चाहे तो वह "परोपकारी महात्मा" विशेष अपने इस नेक इरादे विशेष में कभी सफल विशेष ही न हो सके .....! "अकखी सूतक वेखणा - पर त्रिया - पर धन - रूप" अर्थात प्रभू ने आँखे तो दी थी जिन्दगी आसान बनाने हेतु यदि शक है तो उन से जा कर पूछो जो बिना नेत्रों के जीवन जीने को विवश हैं .....! तब पता चलेगा

कि बिना आँखों के जिन्दगी जीना कितना मुश्किलों से भरा हुआ होता है । और आप है कि इस दुर्लभ आवश्यक कीमती दात विशेष को खर्च विशेष कर रहें हैं आँखों द्वारा परायी स्त्री - पराये धन सम्पदा रूपी सुख साधनों पराये रूपो को अपना बनाने हेतु निरन्तर सोच रूपी व्यवहारिक ब्लातकारों को पूरी तरह से सफल बनाने हेतु .....! और आपके इन महान कृत का नतिजा है "निमख काम स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावै - घड़ी मुहूर्त रस मांडे फिर बहुत-बहुत पछतावै" अर्थात केवल पलक झपकने तक के छोटे से समय विशेष में आप का मन जो है वो पराये-रूप-साधनो इत्यादि का पूरी तरह से ब्लातकार विशेष कर लेता है और विधि हरजाने के रूप में आप से करोड़ो दिन का नरक भोगने हेतु तड़पाने वाला भयानक हिसाब वसूल करना निश्चित कर देती है ......! यदि एक पल के ब्लातकार का यह नतीजा विशेष है तो पूरे दिन का तथा जीवन भर यह महान कृत करते रहने का नतिज़ा भला कौन सी मशीन से जान पाओगे अर्थात अनन्त काल तक का भयानक तड़पाने वाला नर्क विशेष आप ने स्वंय ही अपने लिये संसार में दौड़-दौड़ कर एकत्र विशेष कर लिया है और फिर आप की चीख-पुकार को उस वकत सुनने वाला कोई भी नहीं होगा जब ये भुगतान वसूल किया जायेगा अर्थात फिर आप के पास भुगतने यानी के सिवाय पछताने के और कोई भी उपाय शेष नहीं रह जायेगा .....! "कन्नी सूतक कन पह - लाएतबारी

खाये" अर्थात आज तक यह साबित नहीं हो सका है कि दूसरे की परायी ईर्ष्या -निन्दा-चुगली इत्यादि से कैसे और किस को कितना लाभ या आनन्द विशेष प्राप्त होता है.......? फिर भी प्रत्येक जीव जीवन भर निरन्तर इस सब को ही कमाता रहता है और अपने लिये केवल नर्कों के दरवाजे ही नहीं खोलता अपितु उपलब्ध नर्कों विशेषो को निरन्तर और अधिक बड़ा तथा गहरा बनाने में ही संलग्न विशेष रहता है ......!

"निन्दा भली किसे की नाही - मनमुख मुग्ध करन ।
मुंह काले तिन निन्दका - नर्के थौर पवण ।।"

"हंस श्रेणी की आत्मा" प्रत्यक्ष तो हुई थी अनन्त मण्डलों पर राज विशेष करने हेतू परन्तु मन की संगत में लोभी-स्वार्थी बन कर मजबूर हो गई नर्कों विशेषो को रोशन करने हेतू ......! अब जो भी आत्मा ने लोभ-स्वार्थ की पूर्ति हेतू एकत्र विशेष किया है सभी साधनों-सम्बन्धों सहित - "इस संपदा विशेष पर" आत्मा विशेष को अभिमान अर्थात अहंकार विशेष हो जाता है और इस अहंकार का अम्ली होने पर "क्रोध विशेष" की अत्याधिकता का जन्म विशेष होता है और फिर प्रत्येक विचारिक अहम को पूरा करने हेतू ही "अपराधिक प्रवृत्ति" की आधारशिला रखी जाती है और कब आप नर्कों विशेषो के अधिकारी बना- स्थापित कर दिये जाते हैं सदा के लिये आप को पता भी नहीं चलता अर्थात श् "पाप

मूल अभिमान" । अतः जिन्दगी भर निरन्तर आप अपनी आत्मा पर एक ही दया अर्थात परोपकार करे कि वह मन सहित कभी भी एक क्षण के लिये भी सत्य (प्रभु) से अलग न हो तथा इसे निरन्तर अपने रोजमर्रा के व्यवहारिक जीवन विशेष में प्रमाणिक रूप से साबित विशेष करे कि आप का "मनुष्य मर्यादा" का दृढ़ संकल्प विशेष है । यह मर्यादा विशेष आप घट में संचित आखिरी प्राण विशेष तक निभायें पूरी ईमानदारी विशेष से । "ज्ञान का बधा मन रहे" अर्थात मन पर अंकुश केवल ज्ञान तथा निरन्तर इस उपलब्ध ज्ञान के व्यवहारिक अभ्यास विशेष द्वारा ही लगाया जा सकता है किसी भी बाहरी इंजेक्शन द्वारा प्रतिरोपण नहीं किया जा सकता न ही किसी महान की दृष्टि द्वारा न ही किसी के नाम अथवा अमृत पान द्वारा......! यह अंकुश केवल और केवल तेरे निज़ के ही व्यवहारिक आवश्यक संकल्प विशेष द्वारा निरन्तर ज्ञान की प्राप्ति हेतू तड़पना और इसे निरन्तर अभ्यासित विशेष करने हेतू मन-आत्मा को अम्ली जामा विशेष पहनाना द्वारा ही सम्भव विशेष है । इस की कसौटी है श् "कागा करंग ढड़ोलिया- सगल स्वाइया मांस - इह दोउ नैना मत छूह - पिर देखण की आस" अर्थात जब तक धर्म का आत्म व्यवहारिक बोध न हो इस व्यवहारिक ज्ञान हेतू तड़पते रहना यहां तक कि भूख-प्यास सहित इस शरीर का भी बोध न रहे और काग जब आप को मृत समझ कर आप को खाने हेतू नोचने लगे तब भी आप की आत्मा काग

से कहे कि हे काग तू इस सारे शरीर का मांस बेशक-बेफिक्र हो स्वाद लगा-लगा कर खा ले परन्तु मेरी एक फरियाद सुन अथवा मान ले कि मेरे इन दोनो लोचन अर्थात आँखों के डेलो को मत खाना क्योंकि मुझे अभी तक मेरी मंजिल अर्थात धर्म की प्राप्ति नहीं हुई है यानी के मुझे अभी तक मेरे खस्म विशेष से प्रत्यक्ष साक्षात्कार अथवा अनुभव विशेष नहीं हुआ है "लेकिन" मेरी "आस" रूपी वासना कि प्यास अभी बाकी है और मुझे पूरी उम्मीद है कि ये आत्मिक प्यास मेरे खस्म द्वारा अवश्य ही पूरी तरह से तृप्त विशेष की जायेगी अथवा बुझायी जायेगी यकीनी तौर पर....!

"गुर बिन ज्ञान न होये" अर्थात ये प्यास केवल गुरु यानि के केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ द्वारा ही प्राप्त अथवा बुझनी संभव है "वैधानिक" तौर पर.....! संसार में केवल जानकारी उपलब्ध है और उस का भी फायदा होता है क्योंकि कल में आत्मा निपट अंधी और बहरी ही जन्म विशेष धारण करती है । लेकिन ज्ञान अर्थात सत्य का बोध तो यह हर पल निरन्तर सभी भण्डारों विशेषो सहित अपने निज हृदय विशेष में लगातार धारण विशेष किये रहती है पर्दा रहता है तो केवल अनन्त काल में कमाये हुऐ अच्छे-बुरे कर्मों के नतिजों विशेषो का जो केवल तुझे ही भुगतने और आगे की तौबा सदा हेतू ही "माफी अथवा प्रार्थना" का रुहानी अर्थ विशेष है निरन्तर व्यवहारिक कमाना ही तेरी मुक्ति अथवा

सदा के सुख की पहचान मात्र है जो केवल तुझी तक ही सीमित विशेष है.....!

"सतिगुरू हथ कुन्जी - होर ते दर खुल्लेह नाही"

अर्थात "सत" जो तीनो कालो में लगातार सदा प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है गुरु यानि के केवल रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष ही तीनो कालो विशेषो में सब कुछ बनाती चलाती अथवा धारण विशेष करती हुई प्रत्यक्ष रूप से निरन्तर हज़्म विशेष भी करती जाती है लगातार बदलाव विशेष पहले से बेहतर विशेष करती हुई ही "कुंजी विशेष" है इस आत्मा विशेष पर लगे हुऐ "मन" रूपी विषैले नाग जैसे दुर्लभ आवश्यक "ताले विशेष" की और कोई भी साधन अथवा उपाय या उपचार उपलब्ध विशेष नहीं है इस "ताले विशेष" से सदा हेतू मुक्त विशेष होने का ......! और ये आधार रूपी साधन विशेष कुंन्जी केवल रागमई प्रकाशित आवाज के रूप में ही सदा सभी के लिये सर्वत्र होते हुऐ भी तेरे स्वंय के ही अन्तर में निरन्तर प्रत्यक्ष विधमान विशेष रहती है । बाहर आज तक न ये किसी को मिली है और न ही कभी भी मिलेगी केवल भ्रम-मरीचिका अथवा धोखे विशेष को छोड़ कर । जगत में गुरु-सतगुरू-ड़ेरे-तीर्थ-धर्म- कर्मकाण्ड-यंत्र-ग्रन्थ-पातशाह इत्यादि वगैरह-वगैरह महान-महान केवल और केवल "धोखा" विशेष ही साबित होंगे प्रत्येक काल अथवा परिस्थिती विशेष में इस प्रत्यक्ष

व्यवहारिक उपलब्ध "रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष" दुर्लभ आवश्यक कुंन्जी विशेष के परोक्ष में.....!

"कहे प्रभु अवरू-अवरु कुछ कीजै" अर्थात प्रभु अपनी उपलब्धता को किस तरह से प्रत्यक्ष कर रहा है इसे भुला कर अथवा अन्जान हो कर आप उस के अलग कुछ और-और ही करने में निरन्तर संलग्न विशेष हो तो आप का ये सारा आडंबर-दिखावा-मंत्र-पाठ-पूजा-अर्चना-सेवा इत्यादि-इत्यादि श्रंगार रूपी कर्मकाण्ड केवल बदबू से भरा प्रत्यक्ष गटर विशेष ही साबित होगा प्रत्येक काल स्थिति विशेष में अर्थात आप का कीमती मनुष्य जन्म केवल व्यर्थ के ही फोकट के विषयों में ही बीत विशेष जायेगा और जिस आवश्यक कार्य विशेष हेतू आप का दुर्लभ आवश्यक मनुष्य का जन्म विशेष हुआ था वो तो बीच में ही दफन हो कर कब्र विशेष बन जायेगा अर्थात श् "सब बादि सींगार - फोकट फोकटइया । कियो सींगार मिलण कै ताई - प्रभ लियो सुहागण "थूक" मुख पईआ ।" यानी के यदि मरने से पहले तुझे अपने स्वरूप से साक्षात्कार नहीं हुआ "केवल जीते जी" ही तो समझ ले कि तुझे अपने ही मुख पर पड़ी हुई स्वंय की ही कमायी हुई "थूक विशेष" अर्थात चौरासी लाख रूपी निकृष्ट कमीनी जूने अथवा नर्कों विशेषो में भ्रमण हेतू मजबूर विशेष होना या चाटने को विशेष विवश होना ही पड़ेगा प्रत्येक काल में तेरे सभी महान-महान साधनों विशेषो का प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होने

के बाद भी "वैधानिक" तौर पर.....! मरने के बाद केवल तेरी महान-महान करतूते ही तुझे लेने आती है न कि "सतगुरु विशेष" अर्थात रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष केवल मनुष्य जन्म में जीते जी ही प्रत्यक्ष कमाने-उपलब्ध विशेष करने का मजबून है न कि मरनोपरान्त कर्मकाण्ड या प्रार्थनाओं इत्यादि का आधार रहित श् "विषय" विशेष .....! जिस "ज्ञान विशेष" से मन सदा के लिये शांत हो तृप्त विशेष हो जाता है वह बाहर कही भी किसी से भी प्राप्त नहीं हो सकता "वैधानिक तौर पर" और न ही वो "अंदरूनी गल्तियों" विशेषो में प्राप्त होता है ......! फिर इस अदभुत अनोखे दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष का कौन सा आधारभूतिक स्थान विशेष है......?

"ज्ञान न गल्ली ढूंडिये - कथना करड़ा सार .....!"

धर्म अर्थात अपने आधार अथवा मूल विशेष के प्रति सच्ची आसकती यानी के प्रभु को निरन्तर धारण विशेष करना प्रभु यानी के नाम-अमृत अर्थात केवल रागमई दुर्लभ आवश्यक प्रकाशित आवाज़ विशेष जिसे गुरु-वर्ड-ज्ञान-कीर्तन-ताओ-वाणी-लागोस-शब्द-सतगुरु वगैरह-वगैरह इत्यादि नामो से भी जाना ब्यान विशेष किया जाता है का प्रत्यक्ष साक्षात्कार ही ज्ञान का विषय अथवा ज्ञानी पौरुष आत्मा विशेष होना धार्मिकता अथवा धर्म विशेष कहलाता है ......! मन का सम्बन्ध बाहरी जगत विशेष से

है अर्थात संसार मन द्वारा रचित एक विशेष माया जाल है जिस में एक बार जीव फंस विशेष गया तो फिर उस का उस महाजाल विशेष से निकलना महाअसम्भव जैसा ही दुर्लभ विशेष है .....! मन के इस जाल विशेष में लफ़्ज़ों की महान जानकारी बहुत से "मानो" रूपी विभिन्न-विभिन्न विद्वताओ विशेषो को जन्म विशेष तो देती है लेकिन इन विभिन्न लुभानेवाली आकर्षक विद्वताओ के प्रमाणपत्रों विशेषो में असली "ज्ञान दुर्लभ विशेष" कहीं दूर विशेष खो सा जाता है सदा के लिये .....! जो कि प्रत्येक आत्मा विशेष के लिये बहुत बडा नुकसान रूपी घौर पतन विशेष है "मुंह पर थूक पड़ने" जैसा महापतन .....! फिर जिस भी काल विशेष में जब भी कोई "दुर्लभ" सच्ची आत्मा अपने मूल आधारभूतिक आवश्यक "सत्य" विशेष के प्रति सच्ची आसक्ति को जागृत विशेष करती है प्रमाणिक तौर पर और घौर निरन्तर प्रयत्नशील विशेष होती है तथा "तलाश विशेष" करती है ठीक उस स्थान विशेष पर जहां से संशोधित रूप में उपलब्ध विशेष है निरन्तर "सच्चे ज्ञान विशेष" के रूप में तो अवश्य ही उस दुर्लभ सच्ची आत्मा को यह सच्चा दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष प्राप्त विशेष हो जाता है प्रत्यक्ष साक्षात्कार विशेष के रूप में और उस के घौर महा अनन्त कल्पो विशेषो के महा भ्रम सदा के लिये मिट जाते है इलाज विशेष के रूप में और उस "शीतल-शान्त-महासुख पाया" की दुर्लभ आवश्यक पद्धवि की प्राप्ति विशेष होती है तथा

उस सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये फिर कभी भी कहीं भी कुछ भी जानना या अनुभव विशेष करना "शेष विशेष" नहीं रह जाता ......!

"पढ़ना - गुनना चातुरी - इह तो बात सहल ......!
काम दहन - मन बस करन - गगन चढ़न मुश्किल ......!"

अर्थात पढ़ना-लिखना-सुनना-दर्शन इत्यादि सभी मन से सम्बन्धित अभ्यास यानि के एक गुण विशेष जो संसार के मान-पदार्थो इत्यादि से सम्बन्ध विशेष रखता है केवल अभ्यास मर्यादा से ही प्राप्त विशेष हो जाते है और इसे तो सभी प्रयत्न विशेष कर के अनुभव विशेष कर ही लेते है आसानी से । लेकिन आत्मा विशेष को सभी "कामों विशेषो" की कब्र विशेष बनाना यानि के समस्त वासनाओं इन्द्रियों से स्वंय को ऊपर उठाना तथा मन विशेष के को सदा के लिये अपने "आत्मिक नियन्त्रण" विशेष में रखना और फिर "गगन की चढ़ाई" विशेष पूरी कर लेना केवल स्वंय के ही जीते जी मरने से पूर्व अर्थात पवित्र स्थान विशेष ज्ञान के भण्डार "दसवें द्वार" तक का अपना असली सफर या मोटिव विशेष प्रत्यक्ष प्रमाणिक तौर पर पूरा या प्राप्त विशेष कर लेना भाई ज़रा टेढ़ा यानि के थोड़ा मुश्किल सा विषय विशेष है सभी के लिये .....! आँख बन्द कर के मूर्खो की भांति बैठ विशेष जाना केवल फोकट का विषय विशेष है "आँख मीच मग सूझ न पाई

– ताही अनन्त मिले किम भाई" अर्थात आँख बन्द कर लेने भर से तो आत्मा स्वंय ही अन्धी विशेष हो जाती है उसे तो मार्ग भी नहीं सूझता तो फिर वो उस ज्ञान के भण्डार रूपी "महा घौर अनन्त" विशेष को कैसे मिल अथवा अनुभव विशेष करने में समर्थ विशेष हो सकती है अनन्त काल के बाद भी केवल इन फोकट के धन्धों विशेषो में फंस विशेष कर .....! जगत में लफ़्ज़ों को ज्ञान या नाम बता कर कानों में अंगूठे दे कर शब्द का मूर्खता भरा प्रचार केवल आत्मा का पतन विशेष है पहले योग विशेष के पूर्व के दो अंग विशेष "यम और नियम" का प्रमाणिक पूरी ईमानदारी विशेष से अभ्यास विशेष करो केवल स्वंय के ही इस क्रूरता से भरे अमर्यादित जीवन विशेष में और फिर पूरी तरह से संतुष्ट विशेष हो जाने पर ही ये मन विशेष आप का आप के अधीन यानि के वस विशेष में होगा और फिर "ध्यान" विशेष लगेगा तथा फिर ज्ञान विशेष का पहला चरण दिखाई विशेष देगा जिस के बाद कुछ भी और देखना या जानना अथवा सुनना बाकी नहीं रह जायेगा ......! आगे की पढ़ाई विशेष आप को फिर यहीं पर करवाई जायेगी विशेष तौर पर अतः यहां तक का आवश्यक सफर विशेष पहले केवल और केवल आप को ही पूरा विशेष करना है "विधि" निरन्तर आप पर अपनी निजी नज़र विशेष बनाये रखे हुए आप के साथ विशेष है वैधानिक प्रमाणिक तौर पर ......! और जो आत्मा इसे जीते जी प्रत्यक्ष कमाती है वही

"धर्म" है और कमाने वाला "धर्मात्मा" न कि गद्धिधारी भिखारी विशेष अथवा ब्यान करने वाला महान-महान उपदेशक विशेष ......! यही प्रमाणिक "धर्मात्मा विशेष" ही प्रत्येक काल-स्थिति विशेष में "सत्य" की सच्ची परिभाषा विशेष परिभाषित कर सकता है जो निरन्तर बाहरी रूप से आत्माओ की सोच विशेष के अनुसार प्रभावित हो कर बदलती विशेष रहती है इस मृत भू लोक विशेष में ......!